प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा.कु.शकुतला धनाजी चव्हाण ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध " यशपाल के अमिता उपन्यास का अनुशीलन " मेरे मार्गदर्शन में लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है जो तथ्य इस लघु शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए है,मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पुरी तरह संतुष्ठ हूँ।

कोल्हापुर।
दिनांक :23:06:१९९५।

निर्देशक

(डॉ.वसंत केशव मोरे)
एम.ए.,पीएच.डी.

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

- भूमिका -

यशपालजी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभावाला है। नाटक, निबन्ध, संस्करण, उपन्यास आदि सभी विधाओं में उन्होंने अपनी कला को चलाया है। जब मैंने यशपालजीका 'दिव्या' उपन्यास पढा तब पता चला की यशपालजी ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। इसकी कथावस्तु जानने के बाद उनके पुरे कृतित्व को जान लेने की भावना मन में उत्पन्न हुई।

संपन्न अनुसधान --

१) यशपाल एक समग्र अध्ययन - डॉ. सुनिलकुमार लवटे।

२) यशपाल के उपन्यासोंका मुल्यांकन - सुदर्शन मल्होत्रा।

इसलिए मैंने उनका 'अमिता' उपन्यास का अनुशिलन करना अपना लक्ष्य बनाया।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अनुसंधान करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न निर्माण हुए।

१) क्या 'अमिता' उपन्यास सफल ऐतिहासिक उपन्यास है ?

२) क्या 'अमिता' उपन्यास का वातावरण ऐतिहासिक है ?

३) 'अमिता' उपन्यास का कालखण्ड कौनसा है ? और उससे कौनसा बोध होता है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर उपसंहार में दिए हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए अध्याय विभाजन निम्न प्रकार से किया है।

प्रथम अध्याय - यशपालजीका व्यक्तित्व, इस अध्याय में यशपालजी का जन्म, परिवार, शिक्षा, नौकरी आदिका विवेचन किया है।

द्वितीय अध्याय - यशपाल के साहित्य का संक्षिप्त परिचय इसमें यशपाल के उपन्यास का विवेचन किया है ।

तृतीय अध्याय - यशपाल के 'अमिता' उपन्यास की कथावस्तु , 'अमिता' उपन्यास का चरित्र-चित्रण ।

चतुर्थ अध्याय - 'अमिता' उपन्यास का चरित्र - चित्रण ।

पंचम अध्याय - 'अमिता' उपन्यास का देशकाल - वातावरण । इसमें अशोक कालीन युध्द भूमी का चित्रण किया है ।

षष्ठ अध्याय - 'अमिता ' उपन्यास की भाषाशैली इसमें यशपालजी ने जनसाधारण और पात्रानुकुल भाषा का प्रयोग किया है ।

सप्तम अध्याय - 'अमिता' उपन्यास का उद्देश्य ,इसमें इस उपन्यास की रचना विश्व-शांति की दृष्टि से की गयी है इसका विवेचन किया है ।

उपसंहार --

हर अध्याय का संक्षिप्त सार उपसंहार में दिया है । इस विषय का अनुसंधान करते समय मेरे मन में जो सवाल खड़े हुये थे उनके जवाब मैंने उपसंहार में दर्ज किये है । तथा अनुसंधान की नई दिशा का निर्देश किया है ।

ऋणनिर्देश

इस कार्य को सम्पन्न बनाने में मुझे जिन विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना नैतिक दायित्व समझती हूँ। यह लघु-शोध-प्रबन्ध पूर्ण करने में मेरे गुरुवर्य डॉ. वसंत मोरे जी ने अनमोल सहयोग दिया है। उनके प्रति कृतज्ञ होना मेरा परमधर्म है। आपके सहयोग के बिना यह कार्य संपन्न होने की कल्पनाही नहीं की जा सकती। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध आप ही के योग्य निर्देशन का परिणाम है। आपके इस अनुग्रह से ऋणमुक्त होना मेरे लिए असंभव है। श्री पी. एस. पाटील, डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का आत्मिक सहयोग और उचित मार्गदर्शन से मेरा यह शोध कार्य पुरा हुआ। मेरे गुरुवर्य प्रा. महादेव सतकर जी का आभार मानना मेरे परम कर्तव्य समझती हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के ग्रंथपाल एवं संबंधित कर्मचारियों की मैं आभारी हूँ।

इस शोध-कार्य सृष्ठा मेरे माता-पिताजी तथा मेरे भैयाजी इनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। मेरे जिजाजी और बहनों ने भी इस शोध कार्य में सहयोग दिया।

मेरे कॉलेज के संचालक काकाजी, प्राचार्य बी.टी. सदामते और उपप्राचार्य आर.एस. साळूंखे इन्होंने भी हमारे शोध-कार्य में अपना सहयोग दिया है। मेरे सहयोगी प्राध्यापक तथा इनमें से जो कुछ बच गये है उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। अन्त में सबके प्रति फिर एक बार कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। अत: इस लघु शोध-प्रबन्ध में जो कुछ भी त्रुटियाँ है उनको निराकरन करने का प्रयत्न तो कर चुकी हूँ फिर भी नजर अंदाज से कुछ त्रुटियाँ रह जाने की संभावना है अत: उन त्रुटियों को स्वीकार करते हुये आप से क्षमा चाहती हूँ।

अंत में उन सबके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रोत्साहन, प्रेरणा और सहायता की है।

कोल्हापुर।
दिनांक : २३:०६:१९९५।

शोध छात्र
(प्रा. कु. शकुंतला ध. चव्हाण)